संबंधों की आंच

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की यात्रा के ठीक पहले अमेरिका ऐसे कई कदम उठा रहा है, जिनसे संकेत यही निकलता है कि वह भारत के साथ अपने रिश्ते और गहरे करना चाहता है। गुरुवार को उसने भारत को 22 गार्जियन ड्रोन की बिक्री को मंजूरी दे दी है। इस हाई–टेक उपकरण की यह पहली डील है, जो अमेरिका ने किसी गैर नाटो देश के साथ की है। ये ड्रोन न सिर्फ खुफिया निगरानी और टोही गतिविधियों के लिए बेहद उपयोगी साबित होंगे, बल्कि इनसे हथियारबंद दुश्मन को ढेर भी किया जा सकता है। एक साथ 22 विमान आने से सीमावर्ती क्षेत्रों और हिंद महासागर में भारत की समुद्री ताकत बढ़ जाएगी। यह प्रेडटर ड्रोन का अपडेटेड वर्जन है और अमेरिकी एयरफोर्स में इसे 'एमक्यू–9 रीपर' कहा जाता है। दूर से संचालित यह विमान 50,000 फीट यानी दस मील से ज्यादा ऊंचाई पर उड़ सकता है और 27 घंटे तक हवा में रह सकता है। इसमें डिजिटल इलेक्ट्रॉनिक इंजन कंट्रोल सिस्टम लगा है जो इसकी क्षमता को कई गुना बढ़ा देता है। अभी अमेरिका के अलावा इटली, फ्रांस और स्पेन इसका इस्तेमाल कर रहे हैं। जनरल एटॉमिक्स कंपनी द्वारा बनाए गए इस ड्रोन का भारतीय सौदा दो से तीन अरब डॉलर यानी 130 से 195 अरब रुपये का बैठेगा। इस सौदे पर अमल के साथ ही भारत को अमेरिका द्वारा दिया गया 'मेजर डिफेंस पार्टनर' का दर्जा प्रभाव में आ जाएगा। यह दर्जा देने का फैसला ओबामा प्रशासन का है और इसे अमेरिकी संसद में पास कराया जा चुका है। डॉनल्ड ट्रंप के शुरुआती रवैये को देखकर भारत में यह अटकलें लगाई जाने लगी थीं कि शायद अमेरिका के भीतर भारत को लेकर पहले वाली गर्मजोशी न रह जाए। पर ट्रंप प्रशासन ने यह दुविधा समाप्त कर दी है। उसने साफ संकेत दिया है कि व्यापार से लेकर कूटनीति तक वह भारत को अपना अहम साझेदार मानता है। उसने हमारी सुरक्षा चिंताओं को संजीदगी से लिया है, इसका एक प्रमाण गार्जियन ड्रोन का सौदा भी है। आतंकवाद पर हमारी राय को अहम मानते हुए उसने पाकिस्तान के खिलाफ सख्त रवैया अपनाने के संकेत दिए हैं। दो वरिष्ठ अमेरिकी सांसदों ने द्विपक्षीय बिल पेश किया है, जिसमें पाकिस्तान के साथ अमेरिकी संबंधों में कटौती की बात है। रिपब्लिकन टेड पो तथा डेमोक्रेट रिक नोलन ने शुक्रवार को यह बिल पेश किया, जिसका उद्देश्य पाकिस्तान का 'मेजर नॉन–नाटो एलाई' (अहम गैर–नाटो सहयोगी) दर्जा रद्द करना है। विधेयक में कहा गया है कि पाकिस्तान आतंकवादियों को शरण देता है और आतंकवाद से लड़ने, उसे खत्म करने के लिए दी गई रकम के प्रति जवाबदेही नहीं दिखाता। यह बात भारत ने कई बार कही है। उम्मीद करें कि दोनों देशों की बढ़ती समझदारी आगे और रंग लाएगी।

जरूरी है देशद्रोह का यह मुकदमा!

हमें गंभीरतापूर्वक अपनी किसी एक संस्था को एक वरिष्ठ वकील से राय लेने को कहना चाहिए ताकि विराट कोहली पर देशद्रोह का मामला बनाया जा सके जिनकी अगुवाई में भारत को पाकिस्तान के हाथों रविवार को शर्मनाक पराजय का सामना करना पड़ा। हमारी दलील यह होनी चाहिए कि मैच हारने के बाद न सिर्फ विराट ने पाकिस्तानी टीम को बधाई दी बल्कि यह भी कहा कि 'हम सिर्फ क्रिकेट का एक मैच ही तो हारे हैं।' इस शख्स में राष्ट्रीय सम्मान और गौरव नाम की कोई चीज बकाया नहीं रह गई लगती है। दिल्ली पुलिस को विराट के खिलाफ देशद्रोह के आरोप तय करने के काम पर जुटाया जा सकता है। इस मामले में हमें दिल्ली पुलिस की देशभक्ति को सामने लाना होगा। जरूरत पड़े तो नए लेफ्टिनेंट गवर्नर से कहा जा सकता है कि वह दिल्ली पुलिस का साथ दें। मामले की वैसी ही सुनवाई, जैसी कन्हैया कुमार के मामले में पटियाला हाउस में हुई थी, देश में राष्ट्रवाद की लहर चला सकती है। बीसीसीआई को इस मामले में हमसाज बनाना चाहिए। आतंक और क्रिकेट साथ साथ नहीं चल सकते। चैंपियंस ट्रॉफी में हिस्सा लेने पर सहमति देते हुए बोर्ड को यह तो पूरा एहसास होना चाहिए था कि भारत और पाकिस्तान के आमने-सामने आने की संभावनाएं बन सकती हैं। इस तरह का आमना-सामना राष्ट्रीय भावनाओं के खिलाफ होगा। और इसके बाद गत रविवार को हार का भी सामना करना पड़ा। क्रिकेट में यह शर्मनाक हार रही होगी लेकिन इससे देश के गौरव और आत्मविश्वास को गहरी चोट लगी है और यह हमारे जवानों के लिए ऐसा अपमान है जिसे बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। सरसरी तौर पर तो दंड संहिता की धारा 124ए का इस्तेमाल करना कमजोर लगता है। इस धारा के तहत भारत में कानून के तहत स्थापित सरकार के खिलाफ नफरत, अपमान पैदा करने या उसके खिलाफ विद्रोह पैदा करने का मामला बनता है। बेशक हम सबको पता है कि सुप्रीम कोर्ट ने विभिन्न मामलों में देशद्रोह के कानून पर अपनी राय जाहिर की है जिनमें केदारनाथ सिंह बनाम बिहार राज्य से लेकर हाल के अरुण जेटली बनाम उत्तर प्रदेश राज्य के मामले शामिल हैं। सुप्रीम कोर्ट ने देशद्रोह की बंदिशों और अनुच्छेद 19 के तहत निजी स्वतंत्रता के बीच संतुलन बनाने की कोशिश की है। इसके बावजूद एक चतुर वकील आसानी से अभिव्यक्ति की आजादी को युक्तिसंगत बंदिशों के दायरे में ला सकता है और ऐसी अभिव्यक्ति देश की सुरक्षा के हितों में होनी चाहिए। ऐसे में जबकि हम रावलपिंडी और उसके सिखाए हुए आतंकियों से मुकाबला कर रहे हों तो पाकिस्तान की तारीफ करना और वह भी भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान द्वारा, वाकई देशद्रोह की बात है। तारीफ के ऐसे अल्फाज से भारतीय जवानों और भारतीय सेना के अफसरों का मनोबल तोड़ने का काम किया गया है। यह हो सकता है कि कोर्ट इस बात को ना माने कि विराट ने दुश्मन की भावनाओं को उत्तेजित किया और गैर-वफादारी दिखाई लेकिन मौजूदा मामले में विराट ने और भी बड़ा अपराध किया है। उन्होंने पाकिस्तान को पिशाच के तौर पर पेश करने और उसे अमानवीय करार देने के राष्ट्रीय संकल्प को कमजोर किया। कोहली द्वारा पाकिस्तानी की तारीफ करना भले ही देश के खिलाफ सशस्त्र बगावत न हो लेकिन इससे हमारी राष्ट्रीय राजनीति का ध्रुवीकरण करने को ठेस लगी है और पाकिस्तान के खिलाफ राष्ट्रीय आम सहमति बाधित हुई है। लोगों के दिमाग में रेखाएं खींचने की नीति भी इससे प्रभावित हुई है। यह संभव है कि कोहली के खिलाफ देशद्रोह के आरोप कानून की कसौटी पर न टिक सकें लेकिन यह विवाद सामरिक और रणनीतिक कारणों से जरूरी है। रणनीतिक तौर पर हमें यह दिमाग में रखना होगा कि हम भारत को एकजुट बनाने के महाअभियान में जुटे हैं। यह एकजुटता नेहरूवादी सोच पर आधारित नहीं है। इस एकजुटता का विचार बाहरी और अजनबी के बीच साफ मतभेद पर आधारित है। लोगों के जेहन में शत्रु भावना और ज़हर को कूट-कूट कर भरना होगा। इसके पीछे कोई राकेट साइंस नहीं है। साइमन फ्रायड ने कहा था-'लोगों के एक बड़े तबके को तब तक बांधकर रखा जा सकता है जब तक उनकी आक्रामकता को बाकी लोगों के खिलाफ भड़का कर रखा जा सके।' लहाजा यह बेहद जरूरी है कि हम एक मनोवैज्ञानिक, और बेहतर होगा कि एक बौद्धिक भय फैलाएं। यदि कोई पाकिस्तान को तार्किकता का भी मौका देगा तो उसे इसका खमियाजा भुगतना ही होगा। उदारवादी और छद्म धर्मनिरपेक्ष इसे भय और धमकाने की राजनीति कहेंगे। मिमियाने देना उन्हें। सामरिक तौर पर हमें अपने सहयोगियों को-आज के और आने वाले सहयोगियों को-आश्वस्त रखना होगा। हमें पाकिस्तान विरोध के इस तर्क के साथ उनकी कमर पर बंधन के बोझ बनाए रखने होंगे। उन्हें मुक्त नहीं करना है और न ही उन्हें यह संशय देना है कि हमारी आक्रामकता कमजोर पड़ रही है। हमें देशद्रोह की कठोर परिभाषा चाहिए। विराट कोहली इसके लिए एकदम बढ़िया मामला है। कोहली ने जो कुछ कहा उसे कुछ टीकाकारों ने भले ही यह बताया हो कि यह हार के समय भी गरिमा का प्रदर्शन था लेकिन इस बात के ठोस तर्क हैं कि क्यों कोहली को नहीं छोड़ देना चाहिए। कोहली कोई सामान्य भारतीय नहीं है और न ही उनके साथ कोई छूट बरती जा सकती है। वह देश के लिए मध्यम वर्ग के हीरो हैं जो अपने परिवार के बल पर नहीं बल्कि प्रतिभा, कौशल, मिजाज, क्षमता, संयम और दीवानगी के बूते पर इस मुकाम पर पहुंचे हैं। एक तेजतर्रार कप्तान के तौर पर उनके नेतृत्व को अपर मिडिल क्लास में प्रशंसा मिलती है। यही बारिस्ता भीड़ है। यह भीड़ ग्लोबल दुनिया में यकीन करती है और उसे संकीर्ण राष्ट्रवाद से चिढ़ है। यही वह तबका है जो शायद अब भी राजनीतिक जीवन में गरिमा और सभ्यता की वापसी के लिए छटपटा रहा है। भारतीय मेधा में चल रही इस लड़ाई में गरीब विश्वसनीय नहीं हैं। उनकी अपनी रोजमर्रा की समस्याएं हैं और उन्हें पाकिस्तान या चीन या हमारे एजेंडे से ज्यादा सरोकार नहीं है। यह बारिस्ता भीड़ ही है जो अगर हमारी तरफ आ गई तो काफी असर पड़ेगा। अपनी राजनीतिक और सांस्कृतिक लड़ाई में उन्हें अपने साथ लेने के लिए हमने कई कवायद की है। ये लोग पाकिस्तान की हर हरकत को पैशाचिक तौर पर पेश करने को सामान्य बनाने ही जा रहे थे कि विराट कोहली ने पाकिस्तानी क्रिकेट टीम की तारीफ करने की हिमाकत कर दी। यह खतरनाक इन्फेक्शन हो सकता है। विराट ने हमारे अपर मिडिल क्लास की मेहनत पर पानी फेरने का अपराध किया है। मध्य वर्ग में तो ज्यादा टकराव मोल लेने और हर समय लड़ाकूपन दिखाने का माद्दा होता नहीं है। उन्हें गुस्से में रखने और इस तरह अपने खेमे में रखने के लिए हमें मेहनत करनी पड़ती है। देश को एक नई देशद्रोही सुनवाई की जरूरत है। अब यह सही समय है कि कानून, न्यायपालिका और संविधान को नए भारत के निर्माण के कार्य में लगाया जाए।

लड़ाकू विमानों की कमी

स्वदेशी कंपनी टाटा ने अमेरिका की लॉकहीड मार्टिन के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। समझौते के तहत अत्याधुनिक एफ-16 लड़ाकू विमान भारत में ही बनाए जा सकेंगे। विदेशी सैन्य विमानन आपूर्ति श्रृंखला को सामान सप्लाई करने वाली टाटा कंपनी को अब अडानी समूह से दो-दो हाथ करने होंगे। लड़ाकू विमान बनाने के लिए अडानी समूह ने स्वीडन की कंपनी से हाथ मिलाया है। अंबानी बंधुओं और महिंद्रा समूह समेत कई अन्य कारपोरेट घराने भी लड़ाकू विमानों के 20 अरब स्टर्लिंग पौंड के सौदे के लिए विदेशी विमानन कंपनियों के साथ साझेदारी कर सकते हैं। भारतीय कंपनियों के बीच इस होड़ की वजह यह है कि भारतीय वायुसेना के बेड़े में लड़ाकू विमानों की भारी कमी के चलते भारत सरकार चिंतित है। भारतीय वायुसेना प्रमुख साफ तौर पर स्वीकार कर चुके हैं कि दो-दो मोर्चों पर एक साथ लड़ने के लिए वायुसेना के पास पर्याप्त लड़ाकू विमान नहीं हैं। भारतीय वायुसेना के बेड़े में लड़ाकू विमानों की रिकार्ड कमी अचानक नहीं हुई है। कोई एक दशक से ज्यादा समय से ऐसे विमानों की कमी महसूस की जाने लगी थी। जहां एक ओर डीआरडीओ निर्मित हल्के लड़ाकू विमान तेजस में अभी भी कुछ खामियां हैं, वहीं मोदी सरकार बहु-उद्देश्यीय लड़ाकू विमान खरीद सौदे को सिरे नहीं चढ़ा सकी। भारतीय वायुसेना मुख्यतः सुखोई-30 लड़ाकू विमानों पर आश्रित है। चीन समेत कई देश अपनी वायुसेना में स्टेल्थ तकनीक वाले लड़ाकू विमान शामिल कर रहे हैं परंतु भारत अभी तक अगली पीढ़ी के लड़ाकू विमानों के लिए रूस के साथ साझेदारी को अंतिम रूप नहीं दे पाया है। पूर्णकालिक रक्षामंत्री न होना तथा भारत की अमेरिका के साथ बढ़ती सामरिक नजदीकी भी ऐसे पूरक कारण हैं जिनके चलते भारतीय वायुसेना की जरूरतों की अनेदखी लगातार जारी है। भारत के सैन्य विमानन ने निगरानी और भारी वजन ढुलाई क्षेत्र में ऊंची छलांग लगाई है। परंतु ये साधारण श्रेणी के खरीद सौदे थे और विक्रेताओं ने भी खुशी-खुशी ये सौदे किए। उन्नत किस्म के लड़ाकू विमानों का निर्माण बहुत ही पेचीदा और मुश्किल काम है। इस काम में बड़े पैमाने पर कलपुर्जों की जरूरत होती है और कलपुर्जे आयात करने की राह में कड़े अंतर्राष्ट्रीय कानून भी आड़े आते हैं। लड़ाकू विमानों के लिए स्टेल्थ तकनीक का हस्तांतरण उसी सूरत में हो सकता है जब दो देशों के बीच घनिष्ठ राजनयिक-सैन्य संबंध हों। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अमेरिका के आगामी दौरे के दौरान इस पहलू को खुलकर और सूझबूझ के साथ उठाना होगा। कोशिश हो कि इस सबसे भारत-रूस रक्षा संबंधों को आंच न आने पाये।

:: सहिष्णु प्रेम ::

संत तुकाराम बहुत दयालु व्यक्ति थे। उनकी खुद की आर्थिक हालत कभी ठीक नहीं रही। एक दिन उनकी पत्नी ने कहा-आज घर में खाने के लिए कुछ नहीं, खेत में गन्ने लगे हैं, तुम उन्हीं को पोटली में लपेट लाओ। आज हम गन्ने चूसकर ही भूख मिटा लेंगे। तुकाराम ने खेत से गन्ने उखाड़े और घर लौटने लगे। गांव में प्रवेश करते ही बच्चे उनके पीछे पड़ गए। तुकाराम सबको एक-एक गन्ना देते रहे। घर पहुंचने तक सिर्फ एक गन्ना बचा था। उन्होंने जब पूरी कहानी बताई तो पत्नी को उन पर बहुत गुस्सा आया। गुस्से में उसने गन्ना उठाकर जमीन पर पटक दिया। गन्ने के दो टुकड़े हो गए। तुकाराम ने दोनों टुकड़े उठाए और मुस्कराते हुए पत्नी से बोले-देखो, ईश्वर ने खुद ही इसके दो टुकड़े कर दिए, वह भी यही चाहता है कि हम इस गन्ने को आधा-आधा खा लें। तुकाराम का ऐसा प्रेम और सहिष्णुता देख उनकी पत्नी की आंख भर आई।

कभी धूप, कभी छांव ज़िंदगी

दिल्ली की धूप हमारे जमाने के मास्टर की संटी सरीखा करंटी हुआ करती है। हमारे जमाने इसलिए कहा, क्योंकि आज के मास्टर बच्चों को कहां पीट पाते हैं? न तो ऐसा करने का उनमें साहस है और न ही ऐसा उन्हें करने दिया जाता है। धूप की सही परिकल्पना कीजिए। उसको समझने का जतन कीजिये। हां, ये धूप है कौन-सी। कभी धूप अच्छी भी तो लग सकती है। कभी धूप कड़क भी होती है। दिन की धूप में बाप-सा कड़ापन है। होमवर्क नहीं किया, ज्यादा देर खेल लिए, पड़ोसी के बच्चे से लड़ लिए, किसी के पेड़ से अमरूद तोड़ लाए, ले थप्पड़, दे थप्पड़। बस बीच में मां के आंचल की तरह कहीं से झोंका आता है बारिश का, मां का लाड बीच में कूद पड़ता है। यूं कि अब बाबूजी के अनुशासन और मां के लाड़ के खींचतान में बच्चे की तो दुविधा द्विगुणित हो जाए। आज अलग बात हो सकती है कि कई जगह कि बाप ज्यादा लाड़ करता हुआ दिखे। क्योंकि हो सकता है कि उसके पास समय ही ना हो कि वह बच्चों को चपत लगाये। कभी-कभी बच्चों से मिलने वाला बाप चपत लगाये कि उनसे लाड़ करे। समय-समय का फेरा है। अब धूप का रंग बाबूजी से मिला ही दिया है तो उसके भी कई तेवर हैं। सुबह की धूप, सुबह 11 बजे की धूप, दोपहर की सिर पर तैनात धूप, खेल के वक्त की कनपटी पर पड़ती धूप, ड्रिल मास्टर सरीखीज शाम की धूप विदा कहती प्रेमिका-सी, जाड़े की धूप, भादो के दोपहर की धूप और न जाने कितने रंग हैं। धूप पिताजी के अवतार में है, पापा के भी, डैडी के भी, अलग-अलग लोगों के लिए अलग-अलग संबोधन अलग चरित्र। मोंटेक की धूप, मनमोहन की धूप, जेटली-मोदी और शाह की धूप, शिवराज की धूप और विजय माल्या की धूप मेरे, आपके और एक मजदूर की धूप में अंतर तो होगा ना। धूप में पसीना बहाना कुछ ऐसा मानो कह रहा हो, आदमी जब तक हारता रहता है जिंदा रहता है। जब जीतने लगता है आदमी नहीं रहता। लेकिन सवाल अब भी अनुत्तरित ही है, धूप बाप-सी तीखी क्यों हो गई। लेकिन जो भी हो, यह धूप इंसान को लड़ना सिखाती है। कनपटी से बहता पसीनी बेरोकटोक यहां-वहां, जहां-तहां जा रहा है। आपकी मेहनत का द्रवीकृत रूप पसीना है तो वाष्पीकृत रूप आपके देह की गंध। इस गंध का आनंद लीजिए जब बालों में बेला के फूल खोंसे आपकी प्रेयसी आपसे कान में फुसफुसाते हुए कहे, मुझे तुम्हारी देह की गंध पसंद है, तुम डियो मत लगाया करो। फिर धूप की मेहनत का मतलब यह तो नहीं कि हम धूप में खड़े हैं। धूप में बाल सफेद करने का जुमला भी तो हमने सुना है। यह धूप में बाल सफेद यानी अनुभव लेने वाली बात है। और आखिर में, शाहरुख खान को याद कीजिए, हर घड़ी बदल रही है रूप जिंदगी, धूप है कभी कभी है छांव जिंदगी, जिंदगी में अभी धूप वाला दौर है।

शब्द सामर्थ्य

बाएं से दाएं :

1. लज्जत, जायका 2. मुकाबला, भेंट, होड़ 5. बंदी, कैद की सजा पाने वाला व्यक्ति 7. खल–पात्र, नाटक फिल्म आदि का बुरा पात्र 9. कामी, व्याभिचारी 10. इज्जत जाना, बेइज्जती होना (उपमा)11. ऊटपटांग, विचित्र, कठिन 13. वैभव, ठाट–बाट 14. साथ, सहित 15. कामदेव की पत्नी, प्रेम 16. मैं का बहुवचन 17. दरवाजे–दरवाजे 20. एक राशि, मगर 22. नमी, सीड़, मुहर, ठप्पा 23. औषधालय, चिकित्सालय।

ऊपर से नीचे

1. आत्मनिर्भर, स्वालंबन भावना से युक्त, स्वाश्रित 2. वर्ष, बरस 3. राजी करना, रूठे हुए को खुश करना, प्रसन्न करना 4. नाटक फिल्म आदि का मुख्यपात्र 6. दीवानगी, पागलपन, 7. दो वस्तुओं के टकराने से उत्पन्न ध्वनि, बैर–विरोध, अनबन 8. खीरे की प्रजाति का एक फल 11. बेवकूफ, मूर्ख 12. बादल, मेघ 13. बहुत चालाक, होशियार 14. जिसका मत दूसरे से मिलता हो, 15. दांत, दंत 18. प्राप्ति, वस्तु आदि मिलने का प्रमाण पत्र 19. दंगा–फसाद, उपद्रव विप्लव 21. बचाव, सुरक्षा।

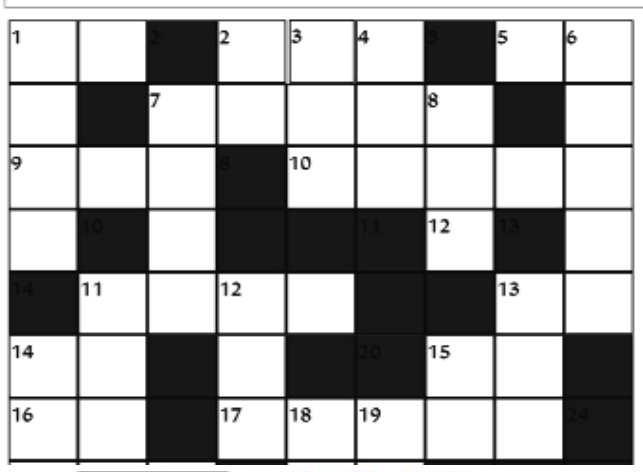

पिछले अंक का हल

ग	ल	त	■	■	■	खा	म	खाँ
णे	■	ल	■	झ	प	की	■	■
श	र	ब	त	■	रं	■	■	मि
■	ज	गा	ना	■	प	रा	का	छा
■	नी	र	■	वि	रा	ज	मा	न
ना	च	■	■	प	■	■	य	■
म	र	णा	स	न्न	■	पा	नी	■

सू-दोकू

	2			6			1	
3			4			2		
							6	
6					4			
	9		5			6		1
4		3			9			2
	8		2				7	
1		2		4		9		6

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार

सू-दोकू क्र.59 का हल

8	7	6	9	5	1	2	3	4
1	3	9	2	8	4	5	6	7
4	5	2	3	7	6	9	1	8
2	8	5	4	6	7	1	9	3
3	1	7	8	9	2	4	5	6
6	9	4	1	3	5	7	8	2

राशिफल

मेष- आज चतुर्थ सुख भाव में चन्द्रमा का प्रबल योग बन रहा है। सांय 5 बजे तक कोई खास डील फाइनल हो जाएगी। राज्य से विशेष सम्मान प्राप्त हो सकता है। भौतिक विकास का योग अच्छा है। समाज में शुभव्यय से आपकी कीर्ति बढ़ेगी।

वृष- आज आपका ध्यान नई योजनाओं में लगेगा। किसी देवस्थान की यात्रा से मन को सकून मिलेगा। कानूनी विवाद में सफलता मिलेगी, स्थान परिवर्तन की योजना सफल हो सकती है।

मिथुन- जो काम आपको सबसे ज्यादा प्रिय है आज वही करने को मिलेगा। आज आप रिलैक्स हो सकेंगे। नई योजनाएं भी दिमाग में आएंगी, सीनियर्स का सहयोग पाने का प्रयास करें।

कर्क- आज का दिन काफी सृजनात्मक है, जो भी काम लगन के साथ करेंगे, आज उसका फल उसी समय मिल सकता है। अधूरे काम निपट जाएंगे, महत्वपूर्ण चर्चाएं होंगी। ऑफिस में आपके विचारों के मुताबिक माहौल बन जाएगा।

सिंह- आज का दिन वैसे तो काफी व्यस्त रखने वाला है, लेकिन धर्म अध्यात्म के मामले पढ़ाई-लिखाई के लिए थोड़ा समय निकाल लेना ही अच्छा होगा। कार्यक्षेत्र में वरिष्ठ अधिकारी आपके कार्यों में रूकावट डालने की कोशिश करेंगे।

कन्या- आज आपसी वार्ता व्यवहार में संयम व सावधानी बरतें। आस-पास के लोगों से टकराव की नौबत न आए इस बात का ध्यान रखें। किसी शुभ मंगल कार्य की चर्चा हो सकती है। भाग्य पर भरोसा रखें और आत्म विश्वास के साथ कार्य करें।

तुला- आज का दिन आपके लिए लाभकारक है। कार्य-व्यवहार से जुड़े सभी विवाद आज सुलझ सकते हैं। नए प्रोजेक्ट पर भी कुछ काम शुरू हो सकता है। जमीन जायदाद के मामले में पारिवारिक और आस-पास के लोग कुछ परेशानी पैदा करने की कोशिश करेंगे।

वृश्चिक- माली हालात को लें तो आज का दिन काफी मजबूत है। दिनभर लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। अतः कार्यशील रहें। परिवार में सुख शान्ति और स्थिरता का आनन्द उठाएं। नौकरी या व्यापार में कुछ नवीनता ला सकें तो आगे चलकर लाभ होगा। काम में नई जान आएगी।

धनु- आज का दिन सावधानी और सतर्कता का है। बिजनेस के मामले में थोड़ा-सा जोखिम उठाएं तो बड़ा लाभ होने की आशा है। रोजमर्रा के कामों से परे कुछ नए कामों में हाथ आजमाएं। किसी अपने के लिए कुछ पैसों का इंतजाम करना पड़ सकता है।

मकर- आज का दिन सामान्य है। भागीदारी में किया व्यापार काफी फायदा पहुंचाएगा। रोजमर्रा के घरेलू कामों को निबटाने का आज सुनहरा मौका है। हो सकता है आज आपको संतान के संबंध में कोई बड़ा फैसला लेना पड़े।

कुंभ- आज का दिन अपने स्वास्थ्य के प्रति सावधानी बरतने का है। मौसम परिवर्तन से शीतोष्ण विकार उत्पन्न हो सकते हैं। खान-पान में लापरवाही बिल्कुल न बरतें। व्यापार के मामले में दिन सुखद व्यतीत होगा।

मीन- आज का दिन लाभकारक रहेगा। व्यापार में जोखिम उठाने का परिणाम आज हितकर रहेगा। परेशानियों को धैर्य और अपने मृदु व्यवहार से सुधारकर ठीक किया जा सकता है। अपनी बुद्धि का प्रयोग करके आप वह सब कुछ पा सकते हैं।